रक्तदान – महादान

प्रस्तावना यूँ तो प्राचीनकाल में बहुत महादान हुए, जिन्होनें धर्म और सत्य के लिए दान किये, जिनमें से एक महादानी दधीचि हुए, जिन्होनें देवासुर-संग्राम में अपनी हड्डियों का दान कर दिया था। एक दानी महारथी कर्ण हुए, जिन्होनें रणभूमि में एक ब्राह्मण को अपने कवच-कुण्डल का दान कर दिया था। यह जानते हुए भी कि वे कवच-कुण्डल के बिना मार दिए जाएँगे। ऐसे ही एक दानी राजा शिवि हुए, जिन्होनें एक कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस दान कर दिया। ऐसे कई महादानी जैसे बलि, जिन्होंने ब्राह्मण-अवतार लिये श्री नारायण को अपने आप का दान कर दिया था। हम ऐसे दान तो नहीं कर सकते, परंतु रक्तदान करके अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। रक्तदान महादान का सही शब्दों में अर्थ है कि रक्तदान ही सभी दानों श्रेष्ठ है। रक्तदान करने से हमारे शरीर को कोई हानि नहीं होती। कहा जाता है - खून - खून को बचा भी सकता है। रक्तदान सभी दानों से श्रेष्ठ है। यदि हम गरीब हैं, फिर भी एक ऐसा दान कर सकते हैं, जिससे किसी के प्राण बचाए जा सकते हैं।

रक्त की संरचना

रक्त लाल रंग का पारदर्शक, स्वाद में नमकीन तथा तरल पदार्थ होता है। इसके दो भाग होते हैं

अ. प्लाज्मा

ब. लाल रक्त-कणिकाएँ

(अ) प्लाज्मा - यह स्वच्छ, हल्के पीले रंग का तथा निर्जीव होता है। रक्त के भार का 55 प्रतिशत से 60 प्रतिशत भाग इसी का होता है तथा शरीर के भार का 5 प्रतिशत भाग होता है। प्लाज्मा में लवण जैसे - सोडियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस तथा आयोडाइड के बाइकार्बोनेट आदि पाये जाते हैं। प्लाज्मा में 0.29 प्रतिशत ऑक्सीजन, 0.5 प्रतिशत कार्बनडाइऑक्साइड तथा 0.5 प्रतिशत नाइट्रोजन घुलित अवस्था में पायी जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 0.7 प्रतिशत तथा ग्लूकोज की 0.1 प्रतिशत मात्रा पायी जाती है। इसमें उत्सर्जी पदार्थ जैसे यूरिक अम्ल, यूरिया, अमीनो अम्ल आदि पाये जाते हैं।

(ब) लाल रक्त-कणिकाएँ - रक्त का शेष 40 प्रतिशत भाग लाल रक्त कणिकाओं का होता है। विभिन्न जीवों में इसकी संरचना, ओंति तथा आकार भिन्न-भिन्न होता है। लाल रक्त कणिकाओं की मोटाई 2 म्यू तथा लम्बाई 7.1 म्यू होती है। इनका हमारे शरीर में जीवनकाल 60 से 80 दिन का होता है। यदि हमारे शरीर में रक्त बनने की दर कम हो जाती है, तो लाल रक्त-कणिकाओं की भी संख्या कम जाती है, जिसे रूधिर क्षीणता कहते हैं। यह रोग फोलिक अम्ल तथा B-12 की कमी से हो जाता है।

रक्त का हमारे शरीर में महत्त्व

जिस प्रकार दीपक में तेल का महत्त्व है इसी प्रकार हमारे शरीर में रक्त का बहुत अधिक महत्त्व है। यह हीमोग्लोबिन से मुक्त ऑक्सीजन को श्वसन की सतह से शरीर के विभिन्न भागों में पहुँचाता है, जिससे ऑक्सीजन का विभिन्न भागों में ऑक्सीडेशन होता है। उत्सर्जी पदार्थों जैसे यूरिया आदि को रक्त वृक्कों में पहुँचाता है जिससे ये पदार्थ मूत्र के रूप में हमारे शरीर से निकलते हैं। रक्त के परिभ्रमण में सभी आवश्यक पोषक तत्व हमारे शरीर के विभिन्न भागों में पहुँचते हैं। जब हमें चोट लग जाती है, तो बहुत खून निकलता है। इस समय लाल रक्त कणिकाओं द्वारा रक्त का थक्का जम जाता है, जिससे रक्त का बहना बंद हो जाता है।

रक्तदान-महादान

हमारे देश में कई दान हुए हैं। हमारे देश में कोई अन्न, गौ, भूमि या आभूषण का दान करता है। इसके पीछे उसका या तो कोई स्वार्थ होता है या उद्देश्य, लेकिन रक्त का दान एक ऐसा दान है, जिसके पीछे किसी का कोई उद्देश्य या स्वार्थ नहीं होता। जिस प्रकार अंधे को नयन-ज्योति मिल जाती है, तो वह इस संसार को देख सकता है, उसी प्रकार रक्त किसी जरूरत-मंद व्यक्ति को मिल जाने से वह इस संसार में जी सकता है। आज के जीवन में जहाँ नाम, पता, टेलीफोन नंबर का स्थान है, वही हमारे शरीर के रक्त समूह का स्थान है। जब किसी दुर्घटनावश किसी का बहुत सा खून निकल जाता है अगर उसे रक्त की जरूरत है और आपका व उसका रक्त-समूह एक है, तो हम उसकी मदद कर सकते हैं। इसमें आपके शरीर को कोई नुकसान नहीं होगा और उसकी जान भी बच जायेगी। हमें अपने रक्त के मूल्य को समझना चाहिए।

रक्तदान करने संबंधी लोगों की भ्रांतियाँ

हमारे देश में ऐसे लोग हैं, जो रक्तदान करने के संबंध में नकारात्मक सोचते हैं। वे सोचतें हैं कि रक्तदान करने से हमारे शरीर में नुकसान होता है, परन्तु उनका सोचना गलत है, क्योंकि रक्तदान करने वाले के शरीर में 48 घंटे में ही प्लाज्मा की पूर्ति हो जाती है और रक्तदान करने से उसके शरीर में कोई फर्क नहीं आता। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य जो स्वस्थ है वह हर तीन महीने में रक्तदान कर सकता है। हमारे शरीर में रक्त 5000 मिली होता है, जिसमें से 350 मिली रक्त किसी भी व्यक्ति को दे सकते हैं। जिस प्रकार जब हम किसी भूखे को भोजन कराते हैं, तो वह हमें दुआ देता है और चला जाता है उसी प्रकार हम जरूरतमंद व्यक्ति को रक्त देते हैं, तो वह भी हमें दुआ देता है। रक्तदान एक परोपकार है। यदि हम कोई अच्छा काम नहीं करते, तो हम रक्तदान करके हमारे जीवन को सफल बना सकते हैं। जिस प्रकार वृक्ष फल दूसरों को देता है तथा नदी अपने लिए नहीं बहती, वह दूसरों पर परोपकार करने के लिए बहती है और सूर्य स्वयं तो जलता है, परन्तु दूसरों को प्रकाश प्रदान करता है। उसी प्रकार हम रक्त का दान करके रक्त की जरूरत वाले व्यक्ति पर उपकार कर सकते हैं। सभी लोग अपने लिए जीते हैं, परन्तु हमें दूसरों के लिए जीना भी सीखना चाहिए।

उपसंहार सभी लोगों को रक्तदान के महत्त्व को समझना चाहिए और रक्तदान करना चाहिए जिससे किसी के प्राण बच सकते हैं और उसके कल्याण के साथ हमारा भी कल्याण हो सकता है। रक्तदान कोई पाप नहीं है, यह एक पुण्य का काम है। हमें रक्तदान की संस्था को बढ़ावा देना चाहिए और हमें भी उनकी सहायता करनी चाहिए। प्राचीन काल में यदि महादानी अपने कवच-कुण्डल से लेकर स्वयं का दान कर सकते हैं, तो हम भी वर्तमान में रक्तदान कर सकते हैं। अंतिम शब्दों में यह कहना चाहूँगी कि :-

रक्तदान है महादान, इस मंत्र को है अपनाना।
जन-जन तक इस वाणी को हम सबको है पहुँचाना।।

रक्तदान करने के लिए सभी को बढ़ावा देना चाहिए। जिससे लोग अपने मानव-धर्म को समझ सकें।